



भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

मध्य रीजनल ब्यूरो

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक: 1-जून-2025

**भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का महासचिव कामरेड बसवाराजू (नंबल्ला केशवराव) सहित
बोटेर-गुंडेकोट में शहीद 28 साथी को शत-शत क्रांतिकारी जोहार.**

मई 21, भारत की क्रांतिकारी इतिहास में और एक उज्ज्वल बलिदानों का अध्याय दर्ज किया. उस दिन हमारी पार्टी के माननीय महासचिव कामरेड बसवाराजू @ गंगन्ना @ प्रकाश @ कृष्णा (नंबल्ला केशवराव) दुश्मन के साथ हुई भीषण लड़ाई में अपने 27 जन सुरक्षा गार्ड एवं स्टाफ के साथ शहीद हुआ. हमारी पार्टी के क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास में पार्टी के संस्थापक नेतागण में एक क्रांतिकारी समन्वेषक कामरेड चारुमजुमदार का शहादत के बाद फिर एक बार पुलिस के साथ साहसिक रूप से लड़ते हुए साथी महासचिव कामरेड बसवाराजू शहादत को अपनाया. 21 अप्रैल के दिन बोकारु जिले के लूगबूडू पहाड़ पर हुई मुठभेड़ में अपनी सुरक्षा दल के साथ 7 जन कामरेडों के साथ केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड विवेक (प्रयाग मांझी) शहीद होने के ठीक एक महीने के बाद कामरेड बसवाराजू शहीद हुआ. कामरेड बसवाराजू के शहादत से हमारी पार्टी एक अपार अनुभवी एवं लंबे समय से अलग-अलग स्तर पर पार्टी का नेतृत्व करते हुए 2017 से महासचिव का जिम्मेदारी निभाते आ रहे एक महान क्रांतिकारी एवं भारत के मेहनतकश का एक बेहतरीन पुत्र को खो गया है. भारत सरकार के साथ शांति वार्ता के प्रक्रिया को चालते हुए शहीद हुए साथियों में कामरेड बसवाराजू तीसरा साथी है. कामरेड बसवाराजू सहित 21 मई को शहीद हुए 28 जन बोटेर-गुंडेकोट साथी कमरेडस मधू (नागेश्वरराव, चिराला, प्रकाशम जिला, आन्ध्रप्रदेश), चंदन (टिप्पू, कोरमा, बीजापुर), सजंती (भमरा बीजापुर), भूमिका (रंगारेड्डी, तेलंगाना), संगीता (करनूल, आन्ध्रप्रदेश), विवेक (युगेन्द्र, असनप्रति, वरंगल तेलंगाना) गुड्डू (सलातोंग, सुकमा) रामे (नूकनपल्ली बीजापुर), लालसू (उरसम बीजापुर) सूर्य, नागेश, रागो, मासे (कोमटपल्ली बीजापुर), राजेश, रवी, सुनील, सरिता, रेश्मा, राजू जमुना, उंगी, सनकी (बुसापुरम, बीजापुर), बदरू, नीलेश, संजू, कमलू, मुखेश सहित कगार नाम से जाना जा रहे सरकारी फासीवादी 'घेराव और उन्मूलन' हमलों में शहीद हो रहे तमाम जन योद्धाओं को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मध्य रीजनल ब्यूरो क्रांतिकारी जोहार अर्पित कर रही है. उनके आशयों को साकार करने के लिए आखरी दम तक लड़ने की शपथ ले रही है.

कामरेड केशवराव के शहादत से नंबल्ला के परिवार अपने प्रिय पुत्र को खो गया और जीएन्नापेटा गांव अपने प्यारे भूमि पुत्र को खो गया. उनके परिवार जन एवं मित्रों का दुख को हमारी ब्यूरो उनके साथ शेयर करते हुए उन लोगों को सांत्वाना मिलने की कामना कर रही है. उनके पार्थिव शरीर को परिवार वालों को दिलाने के लिए सामने आकर खड़े हुई मानव अधिकार कार्यकर्ताओं, वकील एवं 'बंधु मित्रुला कमेटी' के साथियों को हमारी ब्यूरो धन्यवाद पेश करती है. 31 मार्च 2026 तक देश से माओवादी को मिटाने का बात कहने वाले भारत के शासक वर्ग उनके लाशों को उनकी कानून के हिसाब से परिवार जन को देने में ही जब हिचक रही है और उनके लाशों को लेकर दो तेलुगू राज्यों में हजारों की तादाद में उत्पीड़ित जनता लाल झंडे लेकर शहीदों के आशयों को पूरा करने की एवं फासीवादी आपरेशन कगार को फौरन रोकने की और सीपीआई (माओवादी) जिंदाबाद नारें चारों ओर गूंज उठाते हुए होने वाली शवयात्राओं को लेकर पसीना छुट रही शासक वर्ग देश से माओवाद को खत्म करने की बयान देना मात्र एक क्रूर परिहास है, उन के बयाने पूरा पानी पर लेखन के अलावा और कुछ नहीं है. उनके परेशान से कोई भी यह समझ सकते हैं.

कामरेड नंबल्ला केशवराव (71) का जन्म श्रीकाकुलम जिला कोटाबोम्माली मंडल के जिएन्नापेटा में हुई. उनका दो बड़ा भाई है, पिता जी शिक्षक था. उनकी शोकग्रस्त बूढ़ी माँ उनके पार्थिव शरीर के लिए राह देखते हुए बैठी हुई. उनकी बेटे का लाश देखने की आखरी इच्छा भी सरकार ने उनसे छीन लिया है. गांव में उनके परिवार एक संपन्न किसान परिवार होने के चलते विकसित खेती करते थे. कामरेड केशवराव उनका प्राथमिक शिक्षा गांव में ही किया था. बाद में टेक्काली में माध्यमिक शिक्षा पूर्ती कर 1974 में वरंगल के रीजनल इंजिनियरिंग कॉलेज (आर.ई.सी वर्तमान में एन.आई.टी) में प्रवेश लिया. उन्होंने वहां पर पहले बी.टेक (केमिकल इंजिनियरिंग) से पूरा कर बाद में एम.टेक भी किया था. वहीं पर कामरेड केशवराव का जिंदगी क्रांतिकारी आंदोलन के तरफ मोड़ लिया. वहीं पर उन्होंने रेडिकल छात्र संगठन का शुरुआत से लेकर

उसकी विस्तर मे सक्रिय भाग लिया. वरंगल के आर.ई.सी में हिन्दुत्व राजनीति से लैस ए.बी.वी.पी के गूडों के मनमानी व्यवहार को प्रतिरोध करने में कामरेड केशवराव अग्रिम पंक्ती मे रहते थे. उन गूडों को सबक सिकाने के लिए रेडिकल छात्रों से किये गये कार्रवाई में मारे गए एक बिहार के गुंडे का हत्य केस में कामरेड केशवराव को पुलिस ने ए-1 अपराधि के रूप में पेश कर गिरफ्तार किया. बादमें उन्होंने जमानत पर रिहा हो गया.

कामरेड केशवराव पढाई में प्रतिभाशाली छात्र था. और राज्य स्तर के कबड्डी एवं व्हाली-बॉल के खिलाड़ी भी थे. उन्होंने राष्ट्रीय खेलों में भाग लेकर नाम कमाया. उतना ही नहीं, कामरेड केशवराव उफान पर बहने वाले नदियों को भी तैयार ते हुए बिंदास पार करने वाला तैराकी भी था. कई मौकों पर गेरिल्ला साथियों को डुबने से बचाया था. एक तरफ पढाई करते हुए दूसरी तरफ क्रांतिकारी सिद्धांत एवं राजनीति को गहराई से पढ़ता था. कॉलेज छात्रावास के कर्मचारियों से दोस्ताना करने वाले राडिकल छात्रों में उन्होंने कर्मचारियों का एक प्यारा दोस्त बन गया. गर्मी के छुटियों में और अलग-अलग अवसर पर मिलने वाली छुटियों में घर जाकर वहां पर परिवार के सदस्यों के साथ कृषि काम में एक मेहनतकश व्यक्ति के रूप में भाग लेते हुए तमाम गांव वालों का दिल जीतते थे. जब से उन्होंने राजनीतिक क्रियाकलापों में सक्रिय भाग लेना शुरू किया तब से जीएन्नापेटा मे जाना कम हुआ. उन्होंने वरंगल का सब-अर्बन के गांवों से निकट रिश्ता बना लिया. उन गांवों में 1980 के दशक में बटपल्ली गांव राडिकलों के राजनीति के लिए मशहूर था. वहां के छात्र एवं नवजवानों को सुदृढ़ करने के लिए कामरेड केशवराव बहुत प्रयास किया. 1977 में एमरजेन्सी (आपातकाल) हटाने के बाद कामरेड केशवराव के राजनीतिक क्रियाकलापों में और हिजाफा हुआ. उस समय में ही उन का कामरेड कोंडापल्ली सीतारामया एवं सत्यमूर्ति जैसे अग्रश्रेणी क्रांतिकारी नेतागण से निकट संपर्क बना. आर.ई.सी में कामरेड गज्जला गंगाराम (1981 के बरसात में चलाये गए पहली गेरिल्ला प्रशिक्षण शिविर में दुर्घटनावश हथगोला विस्फोट होकर शहीद हुए) चेरकूरी राजकुमार (पार्टी के प्रवक्ता का जिम्मेदारियां निभाते हुए 2010 जुलाई में शांतिवार्ता के दौरान झूठी मुठभेड़ में मारा गया) जैसे प्रवीन इंजनियारिंग कॉलेज के छात्रों के साथ केशवराव विनम्रता से रहते हुए उन लोगों से बहुत सीखा. उनके एक अच्छा क्रांतिकारी वारिश के रूप में उभर कर भारत के क्रांतिकारी इतिहास के पन्नों में सदा के लिए उनका नाम दर्ज कर लिया.

विशाखापटनम एवं पूर्वीगोदावरी के मन्चम में जनता के साथ जैविक संबंध स्थापित करने के बाद आदिवासी, गैर आदिवासी उत्पीड़ित जनता बड़े पैमाने पर जन संघर्षों में खूद पड़े. जनता बड़े पैमाने पर संघर्ष की राह को अपनाने से आन्ध्रप्रदेश की सरकार दर्जनों संख्या में पूर्वीगोदावरी मे आदिवासियों के घरों को जलाया. उस समय समूचे राज्यभर में अलग-अलग तबके के जनता का मदद हासिल करने के लिए एवं मानवाधिकार संगठन वालों को इस मुद्दे पर अपील कर पार्टी से किए गये प्रयास को क्षेत्र स्तर में हर प्रकार की सहायता पहुंचाने में कामरेड गंगन्ना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाया. एक तरफ किसानों के मुद्दे पर उन लोगों को गोलबंद करते हुए दूसरी तरफ पेपरमिल एवं कॉफी बगिचों में काम करने वाले कर्मचारियों को एकजुट कर उनके समस्याओं पर उन लोगों को संघर्षों में उतारने में और सुदृढ़ करने में कामरेड गंगन्ना एक गेरिल्ला दल के कमांडर के रूपमें मुख्य भूमिका निभाया. जन संघर्षों पर एवं आदिवासियों पर बढ़ रही राज्यहिंसा को प्रतिरोध करने के लिए स्थानीय छात्र एवं नवजवानों से "गिरिजन अधिकार परिरक्षा समिति" (ओपीजीआर) संस्था का गठन करने में कामरेड गंगन्ना नेतृत्व भूमिका निभाया.

कामरेड गंगन्ना 1993मे फारेस्ट कमेटी का सचिव होने के बाद, 1990 के शुरुआत सालों में माड़ एवं बस्तर पर ज्यादा केन्द्रीकरण किया. माड़ के पहाड़ों पर गेरिल्ला दल टिकने के लिए दल के साथ में रहते हुए बहुत प्रयास किया. वहां की वातावरण, जनता के जीवनशैली एवं जनता के रीति-रिवाज को समझते हुए जनता के साथ गहराई से एकजुट होने के लिए क्रांतिकारी राजनीति सिखाते थे. वहां की कठिन भौगोलिक स्थिति को सहन करते हुए टिकने के लिए गेरिल्लाओं को मोटीवेट करते थे. दूसरी तरफ माड़ के पहाड़ों में बसे जनता को क्रांतिकारी राजनीति से लैस कर उन लोगों को सुदृढ़ करने के लिए प्रयास किया. यहां तक किया था की आंध्र के जंगलों से कठहार के बीज व पौधे लाकर माड़ जनता को परिचय किया. जनता के कृषि करने की तरिका सहित कई विषयों में बदलाव लाने के लिए गेरिल्लाओं के साथ में रहते हुए प्रयास किया था. बस्तर में सामाजिक अध्ययन एवं वर्ग विश्लेषण करने पर किन्द्रीकरण कर वहां के साथियों के साथ रहते हुए वर्ग संघर्ष को तेज करने में हिस्सा लिया. बस्तर के जनता की जीवनशैली, कृषि करने की तरिका एवं जनता के रिवाजों को समझने में और वहां के नेतृत्व में राजनीतिक एवं सैद्धांतिक अपरिपक्वता के चलते बस्तर में वर्ग समाज की शुरुवात न होने के बहस शुरू हुआ था. उस बहस को समझकर साथियों को सही समझदारी देते हुए उन लोगों के साथ रहकर वर्ग संघर्ष को तेज करने में भाग बना. नतीजतन आज की वर्ग संघर्ष है. उसके फल जनता अनुभव कर रहे हैं.

कामरेड गंगन्ना 1995 शुरुवाती महिनों में दंडकारण्य के फारेस्ट कमेटियों के सचिव के जिम्मेदारियों से हटकर केन्द्र कमेटी सदस्य के रूप में समूचे देशभर के आंदोलन पर ध्यान दिया. उस समय में केन्द्रीय कमेटी से लिये गए निर्णयों के तहत नया रूप से अस्तित्व में आई हुई उत्तरी तेलंगाना सहित अलग-अलग तेलुगु प्रांतों का आंदोलनों को मार्गदर्शन देने में उनके प्रवीन साथियों के साथ भाग लिया करता था. 1995मे दंडकारण्य के दूसरी पार्टी अधिवेशन सफलतापूर्वक संपन्न होने के बाद दंडकारण्य के "कर्रैगुट्टा" में 1995 के शीतकाल में संपन्न "अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन" में कामरेड गंगन्ना गेरिल्ला जोन निर्माण पर अपनी राय रखकर मेजार्टी साथियों का विचारों को जीतकर देश के अलग-अलग रणनीतिक प्रांतों में 1988 तक ही गेरिल्लाजोन अस्तित्व में आने की बात को सैद्धांतिक रूप से साबित किया. बाद में पार्टी आधार इलाका निर्माण करने की लक्ष्य को लेकर उच्च स्तर के कर्तव्यों के साथ आगे बढ़ने में कामरेड गंगन्ना की भूमिका महत्वपूर्ण थी. उस अधिवेशन में कामरेड गंगन्ना केन्द्र कमेटी सदस्य के रूप में निर्वाचित हुआ.

दंडकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन को समूल रूप से नष्ट करने के लिए भारत के सरकार द्वारा चलाये जा रहे दमनकारी नीतियों को प्रतिरोध किये बिना क्रांतिकारी आंदोलन को न बचा पाएंगे न आगे बढ़ा पाएंगे कर पार्टी समझकर सरकार के सुरक्षा बलों पर सैनिक कार्रवाई करने की निर्णय लिये. उस निर्णय के तहत 1987 के बारिश के शुरुआत में

मन्यम क्षेत्र के धारागड्डा में पहली एंबुश हुई थी। उसके फौरन बाद दूसरी एंबुश अदिलाबाद जिले के अल्लमपल्ली में हुई। गेरिल्लाओं से किए गए दोनों एंबुश सफल होना और पुलिस से हथियार भी सीज करना भारत के लुटेरे शासक वर्गों में हड़कंप मचाया। 1972 में अस्थाई रूप से आंदोलन पीछे हटने के बाद कम समय में ही नक्सबाड़ी के क्रांतिकारी राजनीतिक झंडा को दुबारा अत्यंत समर्पित भावना एवं दृढ़संकल्प से लहराने की प्रतिष्ठा भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवाद-लेनिनवाद) (पीपुल्सवार)) को ही मिलेगी। भारत के राज्ययंत्र पर क्रांतिकारी साथी सशस्त्र हमले करने की शुरुआती श्रय धारागड्डा में पहली एंबुश सफल किये गंगन्ना के दस्ता को ही मिलेगी।

भारत सरकार से लड़ रहे भारत के क्रांतिकारी गेरिल्लाओं को 1987 तक आधुनिक सैनिक प्रशिक्षण की आवश्यकता गंभीर रूप से सामने आई। उससे, पार्टी, अपनी संपर्क में आई पूर्व एलटीटीई के कैडरों से (उन लोगों को प्रधान मंत्री राजीवगांधी के समय में भारत सेना द्वारा प्रशिक्षण दिया गया था) तमाम पार्टी के अलग-अलग स्तरों के नेतृत्वकारी कैडरों को पहली बार 1987 शीतकाल में गेरिल्ला प्रशिक्षण शिविर को दंडकारण्य में चलाया था। उस प्रशिक्षण में शामिल 40 जन गेरिल्ला साथियों में कामरेड गंगन्ना भी थे। दुबारा 1989 में मन्यम क्षेत्र में हुई सैनिक प्रशिक्षण शिविर में भी कामरेड गंगन्ना भाग लिया था। उन शिविरों में ही गेरिल्ला साथियों को घात लगाकर हमला करना, डिमोलेशन कार्रवाई, आईईडी ब्लास्ट करना एवं निशानाबाजी जैसे विषयों में बेहतरीन प्रशिक्षण मिला था। उस समय में ही पार्टी गेरिल्लाओं के हाथों में एके-47 पहुंचाया था।

गेरिल्ला कार्रवाइयों में नया अनुभवों के साथ महारत हासिल कर रहे गेरिल्ला साथी एंबुश के साथ-साथ रैड करना भी शुरू किया। दूसरी तरफ नया क्षेत्रों में आंदोलन का विस्तार होना, तभी से नया रूप से सैनिक फॉर्मेशन में प्लाटून का निर्माण होना और उनके हाथों में आधुनिक हथियार सौंपने के लिए पार्टी से लिए गए निर्णय के तहत तेलंगाना एवं दंडकारण्य में कई पुलिस स्टेशनों पर गेरिल्ला साथी रैड कर पुलिस के आधुनिक हथियारों को सीजकर गेरिल्ला साथियों को उनसे लैस किया। देश के अलग-अलग गेरिल्ला जोनों में तीव्र होते जा रहे दुश्मन के हमलों और गेरिल्ला कार्रवाइयों के साथ लाल प्रतिरोध इलाकांग अस्तित्व में आना शुरू हुआ। इनत माम चीजों के मद्देनजर सैनिक क्षेत्र पर विशेष अध्ययन करने के लिए केन्द्रीय कमेटी "स्कोमा" (सब कमेटी ऑन मिलिटरी एफेयरस) की गठन किया। उसी समय, पार्टी कैडरों को राजनीतिक प्रशिक्षण देने के लिए "स्कोप" (सब कमेटी ऑन पोलिटिकल एजुकेशन) का भी गठन किया था। दूसरी तरफ गेरिल्ला युद्ध का संचालन के लिए जरूरतमंद अध्ययन एवं अनुभवों का आधार-प्रधान के लिए केन्द्रीय सैनिक कमिशन सैनिक पत्रिका "जंग" (2005 से अवामी जंग के नाम पर निकल रहा है) को भी शुरू किया। शुरुआती सालों में कामरेड गंगन्ना उसकी संपादक मंडल में न रहने की बावजूद बाद में पीएलजीए की गठन से लेकर यानि 2 दिसंबर 2000 से लेकर 2018 तक अवामी जंग पत्रिका के प्रधान संपादक का जिम्मेदारी निभाया था।

भारत के क्रांतिकारी इतिहास में दो दिसंबर 2000 हमेशा के लिए याद रहने वाली एतिहासिक दिन है। 1999 में एक कोवर्ट ऑपरेशन में शहीद हुये तीन केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड्स श्याम, महेश, मुरली (कोयूर के शहीद साथी) के पहली शहादत साल के अवसर पर जन गेरिल्ला सेना (पी.जी.ए) का घटन हुआ। "जन सेना बिना जनता को कुछ भी नहीं है" कहते हुए माओ से बताये गए सैद्धांतिक अवधारणा से जन गेरिल्ला सेना की गठन हुई। उसके बाद देश के दो दो क्रांतिकारी सेनाओं की विलय से पीजीए का नाम पीएलजीए में तब्दील हुआ। उसकी शुरुआती से लेकर 2018 तक कामरेड गंगन्ना उसकी प्रभारी का जिम्मा निभाया था। पार्टी के नेतृत्व में जन सेना की गठन करने पर, 1998 में सी.सी. मे गंभीर चर्चाएं चलाये साथियों में कामरेड गंगन्ना एक थे।

1969 में गठित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवाद-लेनिनवाद), 1972 में कामरेड चारुमजुमदार शहादत के बाद टूटी-फूटी हुई। उसके बावजूद, उस संघर्ष के विरासत को निभाते हुए विगत से सबक लेकर तिथर-बितर क्रांतिकारियों को एक जुट करने के लिए कोशिश करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में किसान आंदोलनों का नींव रखा गया। उस समय के पार्टी नेतृत्व किए प्रयासों के फलस्वरूप त्वरित समय में ही आंध्रप्रदेश में क्रांतिकारी आंदोलन दुबारा उभर कर आया और 1980 तक वह जन आधार को हासिल कर मजबूत हुआ एवं पीपुल्सवार के नाम पर व्यापक रूप से प्रचार में आया। वह धीरे-धीरे देश के कई हिस्सों में फैल गई। दूसरी तरफ कई अनिवार्य कारणों से शुरुआत से इस पार्टी से बाहर रह कर कामरेड कन्नाई चटर्जी के नेतृत्व में गठित माओवादी कम्युनिस्ट सेन्टर (एमसीसी) उत्तर एवं पूर्वी भारत में कई अनुभवों को हासिल करते हुए धीरे-धीरे नये इलाकाओं में फैल गया। इन दो पार्टियों 1980 के शुरुवाती से ही सही क्रांतिकारियों के बीच में एकता हासिल करने के लिए गंभीर प्रयास करने की बावजूद कुछ सिद्धांत एवं राजनीतिक विषयों में चल रहे मतभेदों के चलते 2004 तक एकता हासिल नहीं हो पाया। दूसरी तरफ कामरेड चारुमजुमदार के नेतृत्व में गठित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवाद-लेनिनवाद) में भाग बनकर, मार खाकर, दुबारा उभर कर पार्टी युनिटी के नाम पर अस्तित्व में आई पार्टी से एकता वार्ता सफल हुई और 1998 में दो पार्टियों का विलय से भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवाद-लेनिनवाद) (पीपुल्सवार) गठित हुई। दो पार्टियों का विलय के बाद 2001 में 9वीं कांग्रेस को चलाया था। इस कांग्रेस में लिये गये निर्णयों के तहत बेस एरियाओं का निर्माण पार्टी का केन्द्र कर्तव्य बना। उसके साथ पार्टी की समझदारी में और कई नया बदलावें उभरकर आईं। उनमें से एक यह था कि, पार्टी जो भी कर्तव्य अपनाने से उसे एक अभियान के रूप में संचालन करना है। फलस्वरूप टीसीओसियां शुरू हुईं। पार्टी से लिये गये पहली टी.सी.ओ.सी में कामरेड गंगन्ना ओडिशा के मलकनगिरी जिला मोटू पुलिस स्टेशन पर किए रैड का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया था। उसके बाद हुई कई एंबुश एवं रैड्स का प्लान करना एवं मोटीवेट करने में नेतृत्व प्रधान किए।

देश में दो अलग-अलग क्रांतिकारी धाराओं के रूप में काम कर रहे सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) एवं एमसीसी के बीच में उपरोक्त विलय के बाद जान लेवा हमलें शुरू हुई. आपस में चल रही हमलों में बिहार-झारखंड में दोनों तरफ के दर्जनों की संख्या में क्रांतिकारी साथी शहीद हुए. इस क्रम में अंतरराष्ट्रीय क्रांतिकारी संगठन प्रमुख रूप से "रिम" (रिवोल्यूशनरी इंटरनेशनलिस्ट मूवमेंट) पहल कदमी के साथ हस्तक्षेप करने से एम.सी.सी.आई साथी पहले सीजफायर का घोषणा कर दो पार्टियों का विलय का पक्ष में प्रस्ताव रखा था. उसके चलते 2002 में पीपुल्सवार के केन्द्रीय कमेटी ने दो धाराओं के बीच में विलय प्रक्रिया को चलाने के लिए विशेष रूप से गठित प्रतिनिधि मंडल में प्रकाश नाम से कामरेड बसवाराजू सदस्य बनकर उसका जिम्मेदारि बखूबी निभाया. फलस्वरूप 21 सितंबर 2004 के दिन नया पार्टी "भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)" की अविर्भाव हुई. दो पार्टियों का नेतृत्व में बनी जन सेनाओं का विलय से पीएलजीए (जनमुक्ति छापामार सेना) अस्तित्व में आई.

दो पार्टियों का विलय से अस्तित्व में आई नई पार्टी को 2005 में केन्द्र सरकार ने देश के आंतरिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरे के रूप में घोषित कर और तीव्र रूप से दमनकारी योजनाओं को तैयार कर त्वरित गति से अमल करना शुरू किया. उसके तहत पहले दंडकारण्य में सामने आई श्वेत आतंकी सलवाजुडूम को हराने के लिए केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में बनी दो एकीकृत कमान में से एक को कामरेड गंगन्ना नेतृत्व प्रधान कर सलवा जुडूम को हराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया. उस समय में पहले किए गए एन.एम.डी.सी विस्फोटक पद्धार्थों के भंडार पर किए रैड को कामरेड गंगन्ना प्रत्यक्ष रूपसे नेतृत्व किया था. शायद वह उनके लिए प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने वाली आखरी रैड होगी. सफलतापूर्वक किए एनएमडीसी रैड के फौरन बाद 10 फरवरी (एतिहासिक भूमकाल दिवस)को हजारों की तादाद में नवजवानों के बीच में कोया भूमकाल मिलिशिया गठन की घोषणा की. 2009 तक हुई सलवाजुडूम की हार के चलते परेशान भारत के लुटेरी शासक वर्गों ने आज तक एक के बाद एक लगातार दीर्घकालिन सैनिक अभियानों को अंजाम दे रहा है. पार्टी कई नुक्सानों को झेलते हुए भी उन तमाम अभियानों को मुहतोड़ जवाब देते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को बचाते हुए आ रही है. उसमें सीएमसी प्रभारी के रूप में कामरेड गंगन्ना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

दो सेनाओं की विलय से अस्तित्व में आई पीएलजीए को सैनिक रूप से मजबूत करने के लिए ओडिशा के नयागढ़ पुलिस स्टेशन पर रैड करने में कामरेड गंगन्ना मुख्य सूत्रधारी के रूप में रहते हुए रैड संचालन के लिए बनी विशेष कमान को निकट मार्गदर्शन दिया. वह रैड सफल होकर पीएलजीए के हाथों में सैकड़ों की संख्या में नया आधुनिक हथियार आ गया. दूसरी तरफ लग-भग उसी समय में जहानाबाद जेल ब्रेक, गिरीडीह में होमगार्ड जवानों का शस्त्र भंडार पर हमला एवं दंतेवाड़ा में भी जेल ब्रेक हुई. 2009 में दंडकारण्य में पहली बटालियन की गठन होने के फौरन बाद बीजापुर जिले के मुकराम में (ताड़मेटला रैड के नाम से जाना जाता है) हुई एंबुश को कामरेड गंगन्ना निकट मार्गदर्शन दिया. उस हमले में देश के केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) के जवानों ने बड़े संख्या में ढेर होकर गेरिल्ला संघर्ष के इतिहास में एक नया अध्याय को जोड़ा है.

दो पार्टियों के विलय से दुबारा केन्द्र कर्तव्य के रूप में अपनाये बेस एरिया निर्माण को लागू करने के लिए कामरेड गंगन्ना लगातार प्रयास किया. सीएमसी प्रभारी के रूप में गेरिल्ला बल को प्रशिक्षण देना, सैद्धांतिक विषय को सान देते हुए लगातार अध्ययन कर कई नये विषयों को पार्टी के सामने रखकर राजनीतिक, सांगठनिक एवं सैनिक विषयों में पार्टी को प्रशिक्षण देने में अथक प्रयास किया. पार्टी के राजनीतिक एवं सैनिक दिशा को समृद्ध करने में उनका ही मुख्य भूमिका है. कामरेड गंगन्ना 2005 से लेकर 2008 तक पूर्वी रीजियन के नेतृत्वकारी कामरेडों के साथ मिलकर वहां पर राजनीतिक एवं सैनिक रूप में विकास करने पर ध्यान दिया. 2014 में दंडकारण्य से बल के साथ सैकड़ों मील पैदल चलकर सारंडा के जंगलों में पहुंच गया. आपरेशन ग्रीनहंट से वहां पर सामना कर रहे नुक्सानों से पार्टी को बाहर लाने के लिए वहां के साथियों से मिलकर दो साल विशेष प्रयास किया. 2016 के बीच में फिर दुबारा चलते हुए कई खतरों के बीच में पुलिस से मुठभेड़ों का सामना करते हुए दंडकारण्य में पहुंच गया. तब से लेकर उनके आखरी दम तक दंडकारण्य ही उनका स्थाई पता बन गई. भारत देश के कई रणनीतिक इलाकाओं में चल रही जनयुद्ध के लपटों से उभर कर आ रही "क्रांतिकारी जन कमेटियों का" निर्माण एवं संचालन और विकास में कामरेड गंगन्ना सीएमसी की प्रभारी के रूप में विशेष भूमिका निभाया. 2018 में संपन्न हुई केन्द्रीय कमेटी के बैठक में कामरेड गंगन्ना पार्टी के महासचिव का जिम्मा लिया. आखरी तक उन्होंने उस जिम्मेदारी को ही निभा रहा था. केन्द्र में सत्तासीन हिन्दुत्व सरकार पांच साल के समय सीमा से आपरेशन समाधान को उसी समय शुरू किया था. उसके तहत प्रहार के नाम पर 'कार्डन एंड सर्व एंड किल' (घेरावकर, खोजो और मारो) कार्रवाईयों को अंजाम दे रहा था. केन्द्र सरकार से अपनाई गई समाधान सैनिक रणनीति को मुहतोड़ जवाब देने में पार्टी से संचालित हर प्रयास में कामरेड गंगन्ना पार्टी महासचिव के रूप में मुख्य भूमिका निभाया.

दो पार्टियों के विलय से बनी नया पार्टी के नेतृत्व में चल रही भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को अत्यंत समन्वय के साथ चलाने के महत्वपूर्ण समय पर दुश्मन से लगातार अंजाम दिए जा रहे सैनिक हमलें एवं अभियानों से पार्टी गंभीर नुक्सानों को झेलते हुए देश के अलग-अलग प्रांतों को नेतृत्व प्रधान कर रहे ब्यूरो के बीच में 2009 के बाद से समन्वय लगभग मार खाई. 2018 से लेकर यह स्थिति और नाजुक बन गई. फिर भी केन्द्र कमेटी के निर्णयों को लागू कराने के लिए और सीसी से बनाई गई कुछ दस्तावेजों को अंतिम रूप देने में महासचिव का भूमिका आदर्शमय था. "चीन एक नया सामाजिक साम्राज्यवाद", "भारत देश में उत्पादन संबंध एवं हमारी कार्यक्रम" जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेजों का तैयारी में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया. केन्द्र कमेटी से जारी किए गए क्रांतिकारी संदेश, चीन क्रांति सफलता के 70वां साल की समारोह पर एवं 50 साल के सर्वहारा वर्ग के सांस्कृतिक क्रांति के अवसर पर सही समय पर संदेश को जारी करने पर विशेष ध्यान दिया था. इन तमाम दस्तावेजों के साथ पार्टी के सैद्धांतिक पत्रिका "पीपुल्सवार" को निरंतर लाने पर महासचिव के रूप में वे विशेष प्रयास किया था. एक बात में बताना है तो पार्टी से लिए गये तमाम कार्यभारों को सही समय पर पूरा

करने के लिए उनका हिस्सा की काम वे करते हुए बाकी साथियों से भी पूरा करवाने में उन्हें प्रोत्साहन देते हुए मार्गदर्शन देने में अभूतपूर्व भूमिका निभाया।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के इतिहास में कई वाममंथी एवं दक्षिणपंथी रुझानों को सामना किया। पार्टी का नेतृत्व गैर सर्वहारा वर्ग के रुझानों का शिखार हुई। 1984 से लेकर 2007 तक पार्टी की एकता कांग्रेस 9वीं कांग्रेस तक चले कई सैद्धांतिक बहसों में कामरेड गंगन्ना सक्रिय रूप से भाग लेते हुए मेजार्टी साथियों का राय को अपनाते हुए पार्टी को एवं आंदोलन को दृढ़ता के साथ खड़े करने में एवं पार्टी दिशा को समृद्ध करने में वे सक्रिय भूमिका निभाया। अलग-अलग समय पर पार्टी से लिए गये भूल-सुधार अभियानों को सफल करने के लिए वे गंभीर प्रयास किया था। 2013 में पार्टी से लिए गए बोल्शेविकरण अभियान को सभी प्रांतों में अपनाते हुए आशा के अनुरूप सफलताएं हासिल करने के दिशा में मार्गदर्शन दिया था।

ऑपरेशन कगार नाम से प्रचलित हुई वर्तमान सैनिक हमलों को मुहतोड़ जवाब देने के लिए संपर्क में रहे कुछ सीसी कामरेडों के साथ दो बार विशेष बैठक कर समूचे पार्टी कैंडरों को एवं सैनिक बल को जागरूक करने में पार्टी महासचिव के रूप में निभाया जिम्मेदारी अविस्मरणीय है। उस क्रम में 2024 जुलाई में पोलितब्यूरो का बैठक की संचालन कर पार्टी के वर्तमान स्थिति पर समग्र रूप से चर्चा कर आंदोलन स्थिति का आंकलन कर भारत के क्रांति को सफल बनाने के लिए पार्टी को तैयार करने के लिए पोलितब्यूरो से लिखे गए सर्कुलर की तैयारी में कामरेड बी.आर सचिव के रूप में सही जिम्मेदारी निभाया था। उस अवसर पर उन्होंने पोलितब्यूरो के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि अगला कुछ दिनों के बाद उनसे महासचिव का जिम्मेदार और कोई दूसरा साथी लेना उचित है। पार्टी के नेतृत्व को उम्र बढ़ना एवं बढ़ते उम्र के चलते सीमितताओं का सामना करने को लेकर पार्टी में 2016 से शुरू किए गए स्वैच्छिक रूप से पद से हटने की परंपरा को हमरी पार्टी में सचेतन रूप से लागू कर रहे हैं।

केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में कामरेड बी.आर सैनिक संबंधित विषयों को अध्ययन करने पर जोर दिया था। मुख्य रूप से चीन के अनुभवों को अध्ययन करने के लिए माओ रचनाओं को सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया था। माओ उद्धारण उनके जुबान पर खेलते थे। कामरेड बी.आर देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र के राष्ट्रीय आंदोलनों के नेतृत्व से मिलकर उनके अनुभवों के बारे में जानकारी लिया था। वैसा ही, नेपाल में चल रही जनयुद्ध के समय पर वे साथी स्वयं शिक्षक के रूप में वहां के गेरिलाओं को हमारी देश में **अनआर्मड** कंबाट सहित सभी प्रकार का गेरिल्ला प्रशिक्षण दिया था। वहां के जनयुद्ध का अनुभवों को अध्ययन करने के लिए नेपाल भी गया था। 2011 में भारत के जनयुद्ध का समर्थन में बनी अंतरराष्ट्रीय भाईचारा कमेटी से चलाये जा रही प्रयासों को प्रोत्साहन देने के लिए केन्द्रीय कमेटी में उस निम्मेदारी निभा रहे साथी को हमेशा मुख्य रूप से 2021 से लगातार प्रोत्साहन देते हुए यह कहते थे कि “हमारी पार्टी अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट सेना के एक अभिन्न अंग है। उसका भूमिका हम अत्यंत सक्रिय एवं गंभीरता से निभाने का जिम्मेदारी हम पर है।” अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पिछले तीन सालों से पिलीपीन्स कम्युनिस्ट पार्टी साथियों से चलाये जा रहे सैद्धांतिक चर्चा सत्रों के लिए हमारी पार्टी की ओर से सैद्धांतिक पत्र लिखकर भेजने में विशेष रुचि दर्शाया था।

कामरेड बी.आर महासचिव के उत्तरदायित्व लेने के बाद से जेल साथियों के मामलों को गंभीरता से लेकर काम किया था। लेकिन समूचे देशभर में भयंकर रूप से चल रही दमन के वजह से उसमें सफल नहीं हो पाये। दुश्मन के शिविर में रहते हुए अत्यंत हिम्मत और साहस के साथ लाल झंडे का गरिमा को ऊंचा उठा रहे सभी साथियों को कामरेड बी.आर अभिनंदन पेश करते थे। उनके लिए जेल के ज़िंदगी के बारे में अनुभव न रहने की बावजूद उनके समस्याओं को समझने के लिए बहुत कोशिश करते थे। जेल जिम्मेदारियां देखने वाले कमेटी के साथियों को हमेशा उन पर विशेष ध्यान देने के लिए बताते थे।

कम्युनिस्ट क्रांतिकारी अनुशासन को पालन करने में कामरेड बी.आर अद्वितीय रूप से रहने वाले थे। पार्टी में कम्युनिस्ट मूल्यों को बरकरार रखने के लिए और कठोर परिश्रम के साथ ज़िंदगी गुजारने के बारे में एक अनोठा नमूना के रूप में था। दुश्मन से चलाये जा रहे पाशविक दमनकारी कार्रवाईयों के बीच में भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को सफल करने के लिए संघर्ष कर रहे गेरिल्ला साथियों को कुछ भी न रहे लेकिन ‘गोलाबारूद्ध एवं काद्यान् (चीन में लगातार माओ से बताये गये जोन्द्रा एवं दाल) रहने से चलेगा’ कहते हुए प्रेरणा देते थे। वे गेरिल्ला साथियों को युद्ध अभ्यास में निपुण बनाने के लिए वे अपने शरीर फिटनेस को बरकरार रखने के लिए लगातार प्रेरणा देते थे।

क्रांतिकारी आंदोलन से किए गए गलतियों को पीबी चिन्हित कर उससे तमाम पार्टी बाहर आने से बिना भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को बचा पाना एवं आगे ले जाना न मुमकिन समझकर अत्यंत मुश्किल भरा उन कर्तव्यों को साकार करने के लिए तमाम पार्टी को कगार सैनिक हमलों के बीच में ही सुधारने की प्रयास शुरू किया। ऐसी परिस्थितियों में पार्टी के अनुभवी साथियों को बचाके रखने के लिए बनी हुई असहाय स्थिति को लेकर बहुत चिंतित होते थे। उनके सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के बारे में बहुत चिंतित होते हुए उन्हें न बचाने पर एवं दुश्मन के गोलियों का शिखार होने पर वे बहुत दुखी होते थे। इस स्थितियों में कामरेड बी.आर का शहादत पार्टी के लिए अपूर्णीय क्षति के रूप में सामने आई। उनका शहादत कोई अप्रत्याशित नहीं थे। छत्तीसगढ़ राज्य के नारायणपुर जिला स्थित माड़ क्षेत्र को “मुक्ति” करने के नाम पर, माड़ में रह रहे पार्टी के तमाम उच्च स्तर नेतृत्व को खत्म करने के लिए उस क्षेत्र को हजारों की तादाद में सुरक्षा बलों को तैनात कर एक अभूतपूर्व सैनिक शिविर के रूप में तब्दील कर लगातार वहां जंगल एवं पहाड़ को खोजबीन करने के समय पर उस एरिया में रह रहे हर एक नेतृत्वकारी साथी को यह स्पष्ट है कि भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में बलिदान देने के लिए समर्पित भावना से काम करना है। वे वैसा ही जनता के बीच में जी रहे हैं, और शहादत भी पा रहे हैं। भारत के माओवादी आंदोलनरत सभी इलाकाओं में काम कर रहे हर एक साथी इस समझदारी से ही काम कर रहे हैं। उनके अतुल्यनीय बलिदान भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में एक बड़ी प्रयोगशाला के रूप में रह जायेगी। शहीदों के बलिदान व्यर्थ नहीं होगी। उनके बलिदानों को

भारत के उत्पीड़ित जनता ऊंचा उठायेगी. और भारत के क्रांति को सफल करने की राह पर भविष्य पीढ़ी आगे बढ़ने की आशा करेंगे. कामरेड बसवाराजू हमें दिए आखरी संदेश अक्षर सत्य है. “मेरे बारे में आप लोग चिंता नहीं करना. मैं ज्यादा से ज्यादा और दो या तीन साल इस जिम्मेदारी को निभाऊंगा. जवान साथियों को बचाने पर आप लोग ध्यान देना है. बलिदानों से आंदोलन कभी कमजोर नहीं पड़ेगी. शहीदों का बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगी. इतिहास में ऐसा कहां हुई नहीं. बल्कि इतिहास में क्रांतिकारी आंदोलनों को बलिदानों द्वारा नई ऊर्जा मिली है. मुझे अभी भी वह विश्वास है..... बलिदानों की प्रेरणा से क्रांतिकारी आंदोलन कई गुणा मजबूत होकर दुबारा आगे बढ़ेगी. इस फासिस्ट सरकारों द्वारा चलाये जा रहे दारुण योजनाएं कभी साकार नहीं होगी. अंतिम जीत जनता का ही होगा”

कामरेड बी.आर पिछले कुछ सालों से अस्वस्थता का सामना कर रहा है. 2021 में अधिक रक्तछाप शुरू हुआ था. दक्षिण बस्तर में थीका गर्मी, पानी की संकट एवं छाव की कमी के चलते कोरोना का शिखार हुआ. उसके चलते गर्मी को बर्दास्त करना उनसे नहीं हो पा रहा था. बावजूद परिस्थिति एवं वातावरण के अनुरूप उनके काम को वे प्लान करते हुए पार्टी को पहलकदमी के साथ मार्गदर्शन देने में कभी पीछे नहीं थे. उनके स्वास्थ्य के बारे में उनके स्टॉफ के नवजवान साथी कामरेड विवेक लगातार ध्यान देते हुए विशेष रूप से नजर रखते थे. खान-पान के विषय में साधारण रहते हुए वे अति साधारण जीवन बिताते थे. लेकिन बढ़ते उम्र एवं अस्वस्थता के चलते उनके स्टॉफ उनके लिए कुछ पसंदीदा चीज खिलाने के लिए लगातार प्रयास करते थे. कामरेड बी.आर उनका जिम्मेदारियां निभाने में उनका स्टॉप के रूप में लंबी समय से कामरेड नवीन (जंग @ नागेश्वरराव) काम किया था. कामरेड नवीन के साथ रहते हुए काम सीखने के लिए 2016 के आखरी में तेलंगाना के पार्टी वरंगल जिला के रहवासी कामरेड युगन्धर (विवेक) को भेजा था. इन दोनों साथी कामरेड बी.आर के साथ ही शहीद हुए.

कामरेड बीआर मन्यम के जंगलों में काम शुरू करने के बाद 1980 के दशक के बीच में स्थानीय आदिवासी महिला साथी के साथ शादी किया था. लेकिन वह साथी लंबी समय तक आंदोलन में न रह पाई. वह घर जाने के लगभग एक दशक के बाद यानि 1990 के दशक के बीच में गढ़चिरोली जिला गुड्डीगूडेम गांव के साथी कामरेड पेंदम रामक्का (शारदा पेशावर क्रांतिकारी) से शादी किया. वह साथी भी 2010 में शहीद हुई. उसके बाद बढ़ रहा जिम्मेदारियों के बीच में उन्होंने दुबारा शादी का प्रस्ताव कभी नहीं लिया था.

कामरेड बीआर 2025 मार्च से शांति वार्ता के लिए प्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन कर रहा था. उसके तहत तेलुगू राज्यों को आधार बनाकर मार्च में भूतपूर्व न्यायाधीश चन्द्रकुमार के नेतृत्व में विख्यात लोगों से शांति कमेटी बनी थी. हमारी पार्टी के केन्द्रीय कमेटी के ओर से और दंडकारण्य के उत्तर एवं पश्चिम सब जोन के प्रभारी की ओर से वैसा ही शांति कमेटी की ओर से केन्द्र सरकार एवं छत्तीसगढ़ के राज्य सरकारों के सामने कई बार हमारी पार्टी शांतिवार्ता के लिए तत्परता के बारे में बयानें जारी किए थे. इसके बावजूद किसी सरकार से भी उसके प्रति कोई रुचि नहीं दिखाई थी. हथियार छोड़ कर, भारत के संविधान के अनुरूप रहने की आश्वासन के बिना शांतिवार्ता के कोई गुंजाईश न होने की रवैया को अपनाई. कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में भूतपूर्व यूपीए की सरकार हो या वर्तमान में भाजपा के नेतृत्व में बनी एनडीए की सरकार से अपनाई गई अड़थाल रवैया से शांतिवार्ता के प्रति रूखावट बनने पर 17 मई के दिन केन्द्रीय कमेटी के प्रवक्ता अभय के नाम पर स्वयं पार्टी के महासचिव से जारी किए गए प्रेस विज्ञप्ति में यह बताते हुए केन्द्र सरकार से अनुरोध किया गया था कि हम हथियार छोड़ने का विषय पर पार्टी के प्रधान नेतृत्व से सलाह मशविरा करने के लिए एक माह की सीजफायर की अवसर मिले. लेकिन उसके विपरीत में पाशविक सरकारें सैकड़ों सुरक्षाबल को तैनात कर नमकहराम में उतरे कुछ आत्मसमर्पित गद्दारों को लेकर उनके गुप्त समाचार पाकर चलाए गए घेराव एवं उन्मूलन कार्रवाई में 28 साथियों का नरसंहार किया है. उनके खून के बलिदानोंने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को और लाल बनाया. खून के प्यासा हिन्दुत्व पाखंडी भारत के शासक वर्ग के “शांतिमंत्र” कितनी पाशविक नरसंहारों को अंजाम देगी और क्रांति के नाम से वह कितने कामपेगी उससे चलाये जा रहे लगातार नरसंहारों से जग-जाहिर हो रही है. वे शांति नहीं चाह रहे हैं. कार्पोरेट वर्गों के हित में वे जंगलों को खबरस्थान में तब्दील कर संसाधनों को लूटकर ले जाने के लिए स्मशान शांति को चाह रहे हैं. उसमें शायद वह तत्काल सफल होगी. लेकिन, अंत में, लूटेरे वर्गों को उत्पीड़ित जनता चरमगीत गायेगी. इस पृथ्वी पर जब तक भूख, असमानता, भेदभाव, बेरोजगार, अत्याचार, हत्या एवं लूट जारी रहेगी जब तक उत्पीड़ित जनता लड़ते रहेगा. उन संघर्षों में से शहीद नंबल्ला केशवराव जैसे शहीदों का “भूत” जन्म लेते रहेगी. इस दुनिया को कम्युनिस्ट (प्रेत) आवाहन करने की बात महान अस्तित्वां मार्क्स एवं एंगेल्स ने कम्युनिस्ट पार्टी की घोषणा पत्र में बताया जैसा वे भूत लुटेरी वर्गों को मकभरा बनायेगी.

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

(प्रताप)

प्रताप

प्रवक्ता

C.R.B (मध्य रीजनल ब्यूरो)

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)